International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 09, pp 271-277, September 2025

बुंदेलखंड में गढ़ी व्यवस्था का उद्भव और विकास: एक ऐतिहासिक अध्ययन

गंगाचरन शर्मा [1], डॉ. मुक्ता मिश्रा[2]

[1] शोधार्थी, इतिहास अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्यप्रदेश

[2] प्राध्यापक, इतिहास अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्यप्रदेश

Email: gangasenthiya@gmil.Com

सार

बुंदेलखंड क्षेत्र भारतीय इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस क्षेत्र में विकसित हुई "गढ़ी व्यवस्था" न केवल सैन्य-सुरक्षा का साधन थी, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचना को भी प्रभावित करती थी। इस शोधपत्र में गढ़ी व्यवस्था के उद्भव और विकास का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का आधार मुख्यतः ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति है, जिसमें प्राचीन ग्रंथों, पुरातात्विक रिपोर्टों, स्थापत्य शिलालेखों और आधुनिक शोधों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। चंदेलों से लेकर बुंदेलों तक गढ़ी व्यवस्था निरंतर परिवर्तित होती रही। चंदेल काल में यह धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों से जुड़ी रही, जबकि बुंदेला शासकों ने इसे सत्ता-संरक्षण और स्थापत्य भव्यता का प्रतीक बनाया। इन गढ़ों ने क्षेत्रीय पहचान, स्थानीय शक्ति-संतुलन तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा में अहम भूमिका निभाई। साथ ही, इनसे जुड़ी कला और स्थापत्य भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। निष्कर्षतः, बुंदेलखंड की गढ़ियाँ केवल सैन्य संरचनाएँ न होकर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की भी धुरी रहीं। आज इनके संरक्षण और डिजिटलीकरण की आवश्यकता है ताकि यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँच सके। इस शोध से न केवल गढ़ी व्यवस्था की ऐतिहासिक प्रासंगिकता उजागर होती है, बल्कि आधुनिक संदर्भों में इनके संरक्षण और पर्यटन विकास की संभावनाएँ भी रेखांकित होती हैं।

बीजशब्द: बुंदेलखंड, गढ़ी व्यवस्था, चंदेल राजवंश, बुंदेला राजपूत, मध्यकालीन किलेबंदी, ऐतिहासिक पद्धति

परिचय

बुंदेलखंड, जो वर्तमान उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में फैला एक अर्ध-शुष्क पठारी क्षेत्र है, अपनी विंध्याचल पहाड़ियों और नदी घाटियों के लिए जाना जाता है। चंदेल काल में इसे जेजाकभुक्ति कहा जाता था। इस क्षेत्र की गढ़ी व्यवस्था मध्यकालीन सामाजिक-राजनीतिक ढांचे का आधार थी। गढ़ियाँ केवल रक्षात्मक संरचनाएँ नहीं थीं, बल्कि प्रशासनिक केंद्र, धार्मिक स्थल और राजवंशी वैधता के प्रतीक भी थीं, जो उत्तर-पश्चिमी आक्रमणों और आंतरिक कबीले संघर्षों के बीच विकसित हुईं (सिंह, 2008)। यह व्यवस्था चंदेलों के 9वीं शताब्दी में सुदृढ़ीकरण से शुरू होकर, बुंदेला राजपूतों के 16वीं शताब्दी के पुनर्जनन तक फैली, जिसमें ओरछा जैसे भव्य परिसर देखे गए। यह विकास मध्यकालीन भारत में विकेंद्रित राजपूत शासन से मुगल-प्रभावित रियासतों तक के बदलाव को दर्शाता है (चंद्रा, 2007)। हालाँकि, विद्यमान साहित्य में एक शोध अंतराल मौजूद है। जहाँ व्यक्तिगत गढ़ियों पर अध्ययन—जैसे कालिंजर का सैन्य इतिहास (कनिंघम, 1885) या ओरछा की वास्तुकला (आशर, 2015)—मौजूद हैं, सामाजिक-आर्थिक भूमिकाओं और स्वतंत्रता के बाद की संरक्षण चुनौतियों पर समग्र अध्ययन की कमी है। हाल के अध्ययनों में भू-स्थानिक विश्लेषण (वर्मा, ए., एवं देवी, ए. (2024)) ने क्षरण पैटर्न उजागर किए, लेकिन प्री-मुगल विकास और पर्यावरणीय कारकों पर ध्यान कम दिया। यूनेस्को दस्तावेज़ (2019a, 2019b) वैश्विक मान्यता की वकालत करते हैं, परंतु ऐतिहासिक संश्लेषण सीमित है (खान, 2011)। बुंदेलखंड की गढ़ी व्यवस्था न केवल क्षेत्रीय सुरक्षा का आधार रही, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के संगठन और शक्ति-संतुलन का भी केंद्र रही। यह शोध ऐतिहासिक स्रोतों और विश्लेषण पर आधारित है, जो इस व्यवस्था के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करता है।

शोध उद्देश्य

- बुंदेलखंड की गढ़ी व्यवस्था के उद्भव और कालानुक्रमिक विकास का विश्लेषण करना।

- चंदेल एवं बुंदेला काल में गढ़ियों के स्थापत्य, सैन्य एवं प्रशासनिक स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
- गढ़ियों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना।
- स्वतंत्रता के बाद गढ़ियों के संरक्षण प्रयासों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना और उनकी वर्तमान स्थिति का संक्षिप्त मूल्यांकन करना।

साहित्य समीक्षा

बुंदेलखंड की गढ़ी व्यवस्था पर साहित्य पुरातत्व, इतिहास और वास्तुकला से संबंधित है, परंतु खंडित है। अलेक्जेंडर कनिंघम (1885) ने कालिंजर और महोबा का प्रलेखन किया, शिलालेखों से कालक्रम स्थापित किया, परंतु साम्राज्यवादी पक्षपात की आलोचना हुई। एच. सी. राय की *डायनेस्टी ऑफ द चंदेल्स* (1954) चंदेल नेटवर्क को 997 ई. के खजुराहो शिलालेख के आधार पर पुनर्जनन करती है, लेकिन आर्थिक भूमिकाएँ कम आँकी गईं।

बुंदेला काल पर, जी. एच. आर. टिलटसन (1999) और कैथरीन बी. आशर (2015) ओरछा और दतिया में शैलीगत संश्लेषण को रेखांकित करते हैं, जहाँगीर महल (1626 ई.) में अकबर-युगीन गठजोड़ दिखता है। आर. के. जैन (2002) सामाजिक-राजनीतिक कार्यों को संदर्भित करते हैं, और एम. ए. खान (2011) भित्तिचित्रों और छतरियों का प्रलेखन करते हैं। हाल के स्कोपस प्रकाशन (वर्मा, ए., एवं देवी, ए. (2024)) संरक्षण के लिए जीआईएस का उपयोग करते हैं, लेकिन सामाजिक-आर्थिक विकास पर कमी है।

सामान्य मध्यकालीन स्रोत जैसे सतीश चंद्रा (2007) और रोमिला थापर (2002) आक्रमणों के संदर्भ में गढ़ियों को रखते हैं, परंतु पर्यावरणीय अनुकूलन (यादव, 1982) या जेनाना डिज़ाइनों में लैंगिक दृष्टिकोण जैसे अंतःविषय क्षेत्रों में कमी है। यूनेस्को (2019a, 2019b) वैश्विक मान्यता की बात करता है, पर प्री-मुगल गहराई नहीं देता। यह अध्ययन संश्लेषित विश्लेषण द्वारा इन अंतरालों को भरता है।

शोध पद्धति

इस शोध में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। अध्ययन पूरी तरह से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें पुरातात्विक सर्वेक्षणों की रिपोर्टें, शिलालेख, इतिहासकारों के ग्रंथ और समकालीन शोध कार्य शामिल हैं। प्रमुख स्रोतों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्टें, *एपिग्राफिया इंडिका* जैसे शिलालेख संकलन, तथा कनिंघम, राय, मजुमदार, थापर, चंद्रा और आशर जैसे विद्वानों के कार्य सम्मिलित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, हाल के अध्ययनों जैसे वर्मा, ए., एवं देवी, ए. (2024) द्वारा प्रस्तुत जीआईएस-आधारित विश्लेषण का भी उपयोग किया गया है ताकि संरक्षण संबंधी समकालीन दृष्टिकोण को जोड़ा जा सके।

पद्धति का ढाँचा मुख्यतः दो स्तरों पर आधारित है। प्रथम, कालानुक्रमिक विश्लेषण के माध्यम से चंदेल काल से लेकर बुंदेला काल तक गढ़ियों के विकास को ऐतिहासिक क्रम में प्रस्तुत किया गया है, जिससे निरंतरता और परिवर्तन दोनों स्पष्ट हो सकें। द्वितीय, विषयगत विश्लेषण के अंतर्गत गढ़ियों की स्थापत्य विशेषताओं, उनकी सामरिक भूमिका, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव और आधुनिक संरक्षण चुनौतियों का क्रमवार अध्ययन किया गया है। तथ्यों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्रोतों का परस्पर मिलान (क्रॉस-वेरिफिकेशन) किया गया है। शिलालेखीय साक्ष्यों को पुरातात्विक रिपोर्टों और आधुनिक शोध निष्कर्षों के साथ जोड़कर परखा गया है। इस प्रकार औपनिवेशिक इतिहासकारों की व्याख्याओं, आधुनिक अध्ययनों और स्थानीय परंपराओं को एक समन्वित दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध की सीमा यह है कि इसमें प्रत्यक्ष क्षेत्रकार्य शामिल नहीं है और यह केवल उपलब्ध साहित्य एवं अभिलेखों पर आधारित है। फिर भी, विविध स्रोतों के तुलनात्मक उपयोग और समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से गढ़ी व्यवस्था के उद्भव और विकास को एक व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है

बुंदेलखंड का ऐतिहासिक संदर्भ

बुंदेलखंड, उत्तर भारत के मध्य भाग में स्थित एक भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई, वर्तमान उत्तर प्रदेश (झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, जालौन आदि) और मध्य प्रदेश (छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना आदि) के जिलों को समेटे हुए है। विंध्याचल पर्वतमाला, यमुना–बेतवा नदियों की घाटियाँ और ग्रेनाइट भूभाग इसे प्राकृतिक रूप से रक्षात्मक बनाते हैं। प्राचीन काल में इसे जेजाकभुक्ति कहा जाता था (सिंह, 2008)। रामायण और महाभारत में बुंदेलखंड का उल्लेख चेदि राज्य के रूप में मिलता है। मौर्य काल (तीसरी शताब्दी ई.पू.) से यहाँ प्रशासनिक और व्यापारिक केंद्र विकसित हुए, जबकि शुंग, कुषाण और गुप्त काल में यह बौद्ध–जैन तथा व्यापारिक गतिविधियों का क्षेत्र रहा (थापर, 2002; यादव, 1982)। गुप्त पतन के बाद यह हूण और क्षेत्रीय वंशों के बीच विवादित रहा। प्रतिहार काल (सातवीं–नौवीं शताब्दी) में स्थानीय सरदारों के सहयोग से पहाड़ी किले (गढ़ियाँ) विकसित हुए, जिसने आगे की गढ़ी व्यवस्था की नींव रखी (ईटन, 2000)। नौवीं

शताब्दी के अंत में चंदेल राजवंश (831 ई. से) का उदय हुआ, जिसने जेजाकभुक्ति को स्वतंत्र राज्य में बदलकर कालिंजर, महोबा और अन्य गढ़ियों का निर्माण किया (राय, 1954; मिशेल, 1992)। तेरहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों (खिलजी, तुगलक) ने चंदेल साम्राज्य को विखंडित कर दिया (कनिंघम, 1885)। सल्तनत के पतन के बाद बुंदेला राजपूतों का उदय हुआ, जिन्होंने पंद्रहवीं शताब्दी में ओरछा को राजधानी बनाकर गढ़ी व्यवस्था का पुनर्जनन किया (चंद्रा, 2007; जैन, 2002)। बुंदेलाओं ने राजपूत सैन्य परंपराओं के साथ मुगल प्रभाव को आत्मसात करते हुए ओरछा, झाँसी और दतिया जैसे प्रमुख किलों का निर्माण किया, जो रक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक, धार्मिक और प्रशासनिक केंद्र बने (आशर, 2015; खान, 2011)। 18वीं शताब्दी में छत्रसाल बुंदेला ने क्षेत्रीय स्वायत्तता स्थापित की, जबकि 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश हस्तक्षेप ने गढ़ियों को प्रशासनिक चौकियों में बदल दिया और 1857 के विद्रोह में झाँसी किला राष्ट्रीय प्रतिरोध का प्रतीक बना (डेविस, 1984)।

चंदेल राजवंश के अधीन गढ़ी व्यवस्था का उद्भव

चंदेल राजवंश (831-1203 ई.) ने जेजाकभुक्ति में गढ़ी व्यवस्था की नींव रखी, जो मध्यकालीन भारत की सैन्य और सांस्कृतिक वास्तुकला की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। चंदेलों का उदय, जो प्रतिहारों के सामंत के रूप में शुरू हुआ, नौवीं शताब्दी के अंत में एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में हुआ। संस्थापक नन्नूक (831-845 ई.) ने प्रारंभिक किलों की नींव रखी, जो विंध्याचल की पहाड़ियों पर रणनीतिक रूप से स्थित थे। इन प्रारंभिक संरचनाओं में साइक्लोपियन मेसनरी (बड़े, अपरिष्कृत पत्थरों की चिनाई) का उपयोग हुआ, जो स्थानीय ग्रेनाइट की प्रचुरता का लाभ उठाती थी। नन्नूक के शिलालेख, जैसे खजुराहो में पाए गए प्रारंभिक अभिलेख, उनके द्वारा स्थापित छोटे किलों और स्थानीय जनजातियों पर नियंत्रण का उल्लेख करते हैं (राय, 1954)।

यशोवर्मन (925-950 ई.) ने चंदेल शक्ति को मजबूत करते हुए बिल्हारी के प्रतिद्वंद्वी कबीले से कालिंजर पर कब्जा किया और इसे जेजाकभुक्ति की राजधानी बनाया। बाँदा जिले में 1,200 फीट की ऊँचाई पर स्थित कालिंजर किला, जिसकी परिधि 7 मील है, चंदेलों की रक्षा प्रणाली का प्रतीक था। इसकी मोटी दीवारें, जो 10-15 फीट मोटी थीं, और बहुभुज बस्तियाँ, जिनमें गुप्त सुरंगें और प्रहरी टावर शामिल थे, इसे लगभग अभेद्य बनाती थीं। कालिंजर में नीलकंठ मंदिर (997 ई., धंग, 950-999 ई.) का निर्माण, जो नागर शैली में बना है, न केवल धार्मिक केंद्र था, बल्कि दक्कन और उत्तरापथ व्यापार मार्गों को नियंत्रित करने वाला रणनीतिक बिंदु भी था। मंदिर के शिलालेखों में चंदेलों द्वारा राष्ट्रकूटों और परमारों के खिलाफ सैन्य अभियानों का उल्लेख है, जो कालिंजर की रणनीतिक महत्ता को दर्शाता है (कनिंघम, 1885)। कालिंजर के किले में निर्मित जलाशय, जैसे गंग-यमुना ताल, और भूमिगत भंडारण कक्ष लंबी घेराबंदी के दौरान आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करते थे। पुरातात्विक सर्वेक्षणों से पता चलता है कि कालिंजर में कम से कम तीन स्तर की रक्षात्मक दीवारें थीं, जिनमें बाहरी दीवार पर नुकीले पत्थर और आंतरिक दीवार पर प्रहरी चौकियाँ थीं (मिशेल, 1992)।

महोबा, गंडा (999-1010 ई.) के अधीन अंतरिम राजधानी, चंदेल गढ़ी व्यवस्था का दूसरा प्रमुख केंद्र था। महोबा का किला, जो किरात सागर झील के किनारे स्थित था, दोहरी दीवारों और घेराबंदी सुरंगों से सुसज्जित था। इसकी रक्षा प्रणाली में ऊँचे प्रहरी टावर और जलाशय शामिल थे, जो 1018 ई. में महमूद गजनवी के आक्रमण को रोकने में सफल रहे। *विक्रमांकदेवचरिता* (विलिस, 1997) में उल्लेख है कि महोबा की गढ़ी ने गजनवी सेना की घेराबंदी को विफल किया, जिसमें स्थानीय भूभाग और जल प्रबंधन की भूमिका महत्वपूर्ण थी। महोबा के किले में शैव मंदिर, जैसे मधकेश्वर मंदिर, और कारीगर गिल्डों के लिए बाजार क्षेत्र थे, जो इसे एक सामाजिक-आर्थिक केंद्र बनाते थे।

विद्याधर (1003-1035 ई.), चंदेलों का सबसे शक्तिशाली शासक, ने गढ़ी व्यवस्था को और विस्तार दिया। उन्होंने अजयगढ़ और अजैगढ़ को विकसित किया, जो विंध्याचल की जंगलों में स्थित वन दुर्ग थे। ये किले अपरिष्कृत पत्थरों से बने थे, जिनमें गुप्त प्रवेश द्वार और जलाशय शामिल थे। अजयगढ़ का किला, जो पन्ना जिले में स्थित है, अपनी त्रिकोणीय संरचना और चट्टानी ढलानों के लिए जाना जाता था, जो आक्रमणकारियों के लिए दुर्गम थी। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार, अजयगढ़ में कम से कम दो जलाशय और एक मंदिर परिसर था, जो शैव और वैष्णव भक्ति का मिश्रण दर्शाता है 11वीं शताब्दी तक, चंदेलों ने एक दर्जन से अधिक गढ़ियाँ स्थापित कीं, जो एक रक्षात्मक जाल बनाती थीं। इन गढ़ियों में कालिंजर, महोबा, अजयगढ़, और अजैगढ़ के अलावा छोटे किले जैसे बरौआ सागर और मऊ साहनिया शामिल थे, जो स्थानीय सरदारों को नियंत्रित करते थे।

चंदेलों ने गढ़ियों को मंदिरों और जल स्रोतों से जोड़कर धार्मिक वैधता प्रदान की। खजुराहो मंदिर समूह, जो विद्याधर और धंग के काल में निर्मित हुआ, न केवल सांस्कृतिक उत्कृष्टता का प्रतीक था, बल्कि गढ़ी व्यवस्था का हिस्सा भी था। मंदिरों के आसपास बने छोटे किलों ने स्थानीय शासन को मजबूत किया। चंदेल शिलालेखों, जैसे 954 ई. के खजुराहो अभिलेख, में गढ़ियों को "दुर्ग" के रूप में वर्णित किया गया है, जो शासक की शक्ति और धार्मिक संरक्षण का प्रतीक थे (मजुमदार, 1951)। चंदेल गढ़ी व्यवस्था का पतन 1203 ई. में कुतब-उद-दीन ऐबक की विजय के साथ शुरू हुआ, जब कालिंजर पर दिल्ली सल्तनत का कब्जा हो गया। इस हार ने चंदेल साम्राज्य को विखंडित कर दिया, जिससे क्षेत्र छोटे-छोटे जागीरदारों और स्थानीय सरदारों के बीच बँट गया। फिर भी, चंदेलों की गढ़ी व्यवस्था ने बुंदेलखंड की रणनीतिक और सांस्कृतिक नींव रखी, जो बाद में बुंदेला राजपूतों द्वारा पुनर्जनन के लिए आधार बनी।

बुंदेला राजपूतों के अधीन विकास

चंदेल वंशज बुंदेलाओं ने 13वीं शताब्दी के सल्तनत विखंडन के बाद गढ़ी व्यवस्था को पुनर्जीवित किया, जो राजपूत सैन्य परंपराओं का पुनरुत्थान था। रुद्र प्रताप सिंह (1501-1531 ई.) ने 1501 ई. में ओरछा की स्थापना की, जो बुंदेलखंड का सांस्कृतिक और राजनीतिक हृदय बन गया। ओरछा का किला, बेतवा नदी के तट पर स्थित, शहरी नियोजन का उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसमें राजा महल, राम राजा मंदिर, और बाजार क्षेत्र शामिल थे। इसकी रक्षात्मक संरचना में नदी का प्राकृतिक अवरोध और चूना-पत्थर की दीवारें शामिल थीं, जो मालवा सल्तनत के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करती थीं (जैन, 2002)। मधुकर शाह (1554-1591 ई.) ने ओरछा में फारसी उद्यान और छत्रियाँ जोड़ीं, जो मुगल प्रभाव को दर्शाती थीं। ये उद्यान, जैसे राजमहल के निकट बने चारबाग, न केवल सौंदर्यवादी थे, बल्कि जल प्रबंधन में भी सहायक थे। बीर सिंह देव (1605-1627 ई.), अकबर के सहयोगी, ने ओरछा में जहाँगीर महल (1626 ई.) का निर्माण किया, जो चूना-पत्थर से बनी सात मंजिला संरचना थी, जिसमें झरोखे, गुंबद और पिएत्रा ड्यूरा सज्जा थी। दतिया में सात मंजिला महल (1614 ई.) उल्टे कमल गुंबद और जटिल भित्तिचित्रों से सुसज्जित था, जबकि झाँसी किला (1613 ई.), बंगिरा पहाड़ी पर निर्मित, 25 फीट ऊँची ग्रेनाइट दीवारों, तोपखानों और मगरमच्छों से भरी खाइयों के साथ एक अभेद्य गढ़ था (टिलटसन, 1999)। छत्रसाल बुंदेला (1671-1731 ई.) ने मुगल पतन के बीच बुंदेलखंड में स्वायत्तता स्थापित की। उन्होंने महोबा पर पुनः कब्जा किया और गढ़कुंडर (पुर्तगाली-प्रभावित तारा-आकार का किला) बनाया, जिसमें तोपखाने और गुप्त सुरंगें थीं। 18वीं शताब्दी तक, बुंदेलखंड में 50 से अधिक गढ़ियाँ फैलीं, जो मराठा और मुगल प्रभावों के बीच संतुलन बनाए रखने में सहायक थीं। इनमें टीकमगढ़, पन्ना, और चरखारी जैसे किले शामिल थे, जो स्थानीय शासन और व्यापार को नियंत्रित करते थे (शर्मा, 2020। ब्रिटिश हस्तक्षेप (19वीं शताब्दी) ने इन गढ़ियों को प्रशासनिक चौकियों में बदल दिया। उदाहरण के लिए, झाँसी किला 1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई का गढ़ बना, लेकिन ब्रिटिश नियंत्रण ने इसकी स्वायत्तता को समाप्त कर दिया (डेविस, 1984)।

बुंदेलखंड में गढ़ियों का वास्तु विकास

चंदेल राजवंश (831-1203 ई.) के तहत बुंदेलखंड की गढ़ी व्यवस्था की वास्तुकला में स्थायित्व और कार्यक्षमता पर विशेष जोर था, जो क्षेत्र की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और रणनीतिक आवश्यकताओं से प्रेरित थी। कालिंजर किला, जो बाँदा जिले में 1,200 फीट ऊँची ग्रेनाइट पहाड़ी पर स्थित है, इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी दीवारें, साइक्लोपियन मेसनरी (बड़े, अपरिष्कृत पत्थरों की चिनाई) से निर्मित, 10-15 फीट मोटी थीं, जो आक्रमणकारियों के लिए अभेद्य थीं। ये दीवारें विंध्याचल की प्राकृतिक चट्टानों के साथ एकीकृत थीं, जिससे किला प्राकृतिक और गानव-निर्गित रक्षा का संयोजन बन गया। कालिंजर गें नीलकंठ गंदिर (997 ई.), नागर शैली गें निर्गित, छोटे अंग-शिखरों (उप-शिखर) और जटिल नक्काशी से सुसज्जित था, जो धार्मिक और रणनीतिक महत्व को दर्शाता था। किले के भीतर जलाशय, जैसे गंग-यमुना ताल, और भूमिगत सुरंगें थीं, जो लंबी घेराबंदी में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करती थीं। इन संरचनाओं में गुप्त प्रवेश द्वार और प्रहरी टावर शामिल थे, जो विंध्याचल की जंगली ढलानों का लाभ उठाते थे, जिससे किला वन दुर्ग के रूप में कार्य करता था (हंटिंगटन, 1985)। महोबा और अजयगढ़ जैसे अन्य चंदेल किलों में भी समान विशेषताएँ थीं, जैसे दोहरी दीवारें और जलाशय, जो स्थानीय ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर से निर्मित थे। ये किले न केवल रक्षा के लिए थे, बल्कि शैव मंदिरों और कारीगर गिल्डों के साथ सामाजिक-धार्मिक केंद्र भी थे, जो चंदेल शासन की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते थे (मिशेल, 1992)।

बुंदेला राजपूतों (15वीं-18वीं शताब्दी) के उदय के साथ, गढ़ी व्यवस्था में वास्तुशिल्प नवाचारों ने इंडो-इस्लामिक तत्वों को आत्मसात किया, जो मुगल और राजपूत शैलियों का एक अनूठा संश्लेषण था। ओरछा किला, जो बेतवा नदी के तट पर स्थित है, इस परिवर्तन का प्रतीक था। इसके राजा महल और जहाँगीर महल (1626 ई.) में झरोखे (ओवरहैंगिंग बालकनियाँ), चूना-पत्थर की नक्काशी, और फारसी-प्रेरित चारबाग उद्यान शामिल थे, जो मुगल प्रभाव को दर्शाते थे। जहाँगीर महल की सात मंजिला संरचना, जिसमें उल्टे कमल गुंबद और पिएत्रा ड्यूरा (मुगल-शैली की रंगीन पत्थर जड़ाई) थी, सौंदर्य और रक्षा का संतुलन दर्शाती थी। दतिया का सात मंजिला महल (1614 ई.) शीश गहल (आईने वाली हॉलें) से सुसज्जित था, जो प्रकाश परावर्तन के लिए डिज़ाइन किया गया था, और इसकी जटिल भित्तिचित्रों गें वैष्णव थीम्स प्रमुख थीं। झाँसी किला (1613 ई.), बंगिरा पहाड़ी पर निर्मित, अपनी 25 फीट ऊँची ग्रेनाइट दीवारों, बहु-स्तरीय द्वारों, और मगरमच्छों से भरी खाइयों के लिए जाना जाता था, जो इसे तोपखाने और घेराबंदी के खिलाफ अभेद्य बनाती थीं। इन दीवारों में एकीकृत तोपखाने और रणनीतिक रूप से रखे गए प्रहरी टावर क्षेत्र की मराठा और मुगल खतरों से रक्षा करते थे (आशर, 2015; खान, 2011)।

बुंदेला किलों में धार्मिक प्रतीकात्मकता का विकास भी उल्लेखनीय था। जहाँ चंदेल किले शैव संन्यास पर केंद्रित थे, वहीं बुंदेला किलों में वैष्णव प्रभाव प्रमुख हुआ। ओरछा के राम राजा मंदिर और जहाँगीर महल में रामायण-थीम वाले भित्तिचित्र इस बदलाव को दर्शाते हैं। ये भित्तिचित्र, जो मुगल पिएत्रा ड्यूरा तकनीक से सजाए गए थे, राजपूत और मुगल सौंदर्यबोध का संलयन दर्शाते थे। गढ़कुंडर जैसे बाद के किलों में पुर्तगाली प्रभाव, जैसे तारा-आकार की संरचना, भी देखा गया, जो छत्रसाल बुंदेला (1671-1731 ई.) के युग में यूरोपीय सैन्य तकनीकों के प्रभाव को दर्शाता है (बीच, 1990)। यह वास्तु विकास, जो 16वीं-17वीं शताब्दी में परिपक्व हुआ, राजपूत ऊँचाई (सीधी रेखाएँ और भव्यता) और मुगल वक्रता (गुंबद, मेहराब, और सजावटी तत्व) का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण था, जिसने बुंदेलखंड की गढ़ियों को सैन्य और सांस्कृतिक दोनों दृष्टिकोण से विशिष्ट बनाया।

गढ़ी व्यवस्था की रणनीतिक और सामाजिक-आर्थिक भूमिका

चंदेल गढ़ियाँ, विशेष रूप से कालिंजर, उत्तरापथ और दक्कन व्यापार मार्गों की रक्षा में महत्वपूर्ण थीं। कालिंजर ने मध्य भारत के व्यापारिक केंद्र के रूप में कार्य किया, जहाँ चंदेल शासकों ने सिक्के ढाले और कारीगर गिल्डों को भूमि अनुदान दिए। पुरातात्विक साक्ष्यों, जैसे कालिंजर में पाए गए ताम्र सिक्कों और शिलालेखों, से पता चलता है कि यहाँ चाँदी और ताँबे के सिक्के प्रचलन में थे, जो व्यापारिक लेन-देन और कर संग्रह को सुगम बनाते थे। ये गढ़ियाँ स्थानीय जनजातियों और पड़ोसी राजवंशों, जैसे राष्ट्रकूटों और परमारों, के खिलाफ रणनीतिक नियंत्रण बिंदु थीं, जो क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बनाए रखती थीं (यादव, 1982)।

कालिंजर और महोबा जैसे किलों में जलाशयों और बावड़ियों ने जल प्रबंधन को सुदृढ़ किया, जो अर्ध-शुष्क बुंदेलखंड में कृषि और बस्तियों के लिए महत्वपूर्ण था। बुंदेला काल में गढ़ियों की भूमिका और अधिक बहुआयामी हो गई। ओरछा, झाँसी, और दतिया जैसे किले न केवल रक्षात्मक संरचनाएँ थे, बल्कि सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र भी थे। ओरछा में बेतवा नदी के किनारे निर्मित बावड़ियाँ और तालाब, जैसे किरात सागर, क्षेत्र की शुष्कता से निपटने में सहायक थे। ये जल संरचनाएँ कृषि उत्पादन को बढ़ाती थीं, जिससे गढ़ियाँ सामंतवादी अर्थव्यवस्था का आधार बनीं। ओरछा में केशवदास जैसे साहित्यकारों और कवियों का संरक्षण सांस्कृतिक उत्कर्ष का प्रतीक था, जिसने बुंदेलखंड को साहित्य और कला का केंद्र बनाया। केशवदास की रचनाएँ, जैसे *रामचंद्रिका*, ओरछा के वैष्णव-केंद्रित सांस्कृतिक माहौल को दर्शाती हैं (सिंह, 2008)।

सामाजिक रूप से, गढ़ियाँ राजपूत सामंतवादी संरचना को बनाए रखती थीं। जेनानाएँ (महिलाओं के क्वार्टर), जैसे ओरछा और दतिया के महलों में, राजपूत सम्मान और जाति पदानुक्रम को संरक्षित करती थीं। ये संरचनाएँ, जो गोपनीयता और सुरक्षा के लिए डिज़ाइन की गई थीं, महिलाओं के लिए अलग स्थान प्रदान करती थीं, जो सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा था। मंदिर, जैसे ओरछा का राम राजा मंदिर, धार्मिक एकता का केंद्र थे, जो हिंदू और स्थानीय समुदायों को एकजुट करते थे। आर्थिक रूप से, गढ़ियाँ कृषि अधिशेष, व्यापार कर, और जागीर प्रणाली को नियंत्रित करती थीं। झाँसी और दतिया में जागीरदारों को भूमि अनुदान दिए जाते थे, जो कर संग्रह और सैन्य सेवा के बदले शासकों को वफादारी प्रदान करते थे। ये गढ़ियाँ सामंतवादी अर्थव्यवस्था का इंजन थीं, जो स्थानीय बाजारों और व्यापार को संगठित करती थीं (ईटन, 2000; चंद्रा, 2007)।

आधुनिक संदर्भ में, बुंदेलखंड की गढ़ियाँ पर्यटन और स्थानीय रोजगार का महत्वपूर्ण स्रोत बनी हुई हैं। ओरछा और झाँसी जैसे किले, जो यूनेस्को की अस्थायी विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं, हजारों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। हालांकि, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन के कारण इन गढ़ियों को संरक्षण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके लिए जीआईएस-आधारित संरक्षण रणनीतियों की आवश्यकता है (वर्मा, ए., एवं देवी, ए. (2024))

गढ़ी व्यवस्था का कालानुक्रमिक विकास

काल / Period	प्रमुख विशेषताएँ (Key Features)
चंदेल काल (9वीं–13वीं शताब्दी)	कालिंजर, महोबा, अजयगढ़ जैसे किलों का निर्माण; साइक्लोपियन मेसनरी; शैव मंदिरों से संबंध; व्यापार मार्गों की सुरक्षा।
बुंदेला काल (15वीं–18वीं शताब्दी)	ओरछा, झाँसी, दतिया जैसे किले; इंडो-इस्लामिक स्थापत्य का प्रभाव; वैष्णव धार्मिक प्रतीक; साहित्य और कला का उत्कर्ष।
ब्रिटिश काल (19वीं शताब्दी)	किलों का प्रशासनिक और सैन्य उपयोग; 1857 के विद्रोह में झाँसी किले की केंद्रीय भूमिका; स्वायत्त सत्ता का अंत।
आधुनिक संदर्भ (20वीं–21वीं शताब्दी)	यूनेस्को की tentative heritage सूची में शामिल; संरक्षण चुनौतियाँ; जीआईएस-आधारित प्रबंधन और पर्यटन की संभावनाएँ।

निष्कर्ष

बुंदेलखंड की गढ़ी व्यवस्था केवल सैन्य शक्ति और किलाबंदी की परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने क्षेत्र की राजनीतिक संरचना, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और सामाजिक संगठन को गहराई से प्रभावित किया। चंदेल काल में गढ़ियाँ धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों

के केंद्र रहीं, जबकि बुंदेला शासकों ने उन्हें स्थापत्य कला और सत्ता-सुरक्षा का अद्वितीय प्रतीक बनाया। इन गढ़ियों के माध्यम से न केवल क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन स्थापित हुआ, बल्कि व्यापारिक मार्गों की रक्षा और जनसामान्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित हुई। इतिहास साक्षी है कि इन गढ़ियों ने समय-समय पर आक्रमणों का सामना किया और क्षेत्रीय अस्मिता को बचाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थापत्य की दृष्टि से इनकी भव्यता भारतीय शिल्पकला के उत्कर्ष को दर्शाती है, वहीं सांस्कृतिक रूप से यह समाज के सामूहिक जीवन और विश्वासों को अभिव्यक्त करती है। अतः गढ़ी व्यवस्था को केवल अतीत का अवशेष न मानकर इसे भारतीय सभ्यता की एक जीवंत धरोहर के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान संदर्भ में इन गढ़ियों का संरक्षण, पुनरोद्धार और डिजिटलीकरण अत्यावश्यक है। इनके माध्यम से न केवल इतिहास और परंपरा को सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि पर्यटन, शिक्षा और क्षेत्रीय विकास को भी प्रोत्साहन मिल सकता है। इस प्रकार बुंदेलखंड की गढ़ियाँ अतीत की गौरवशाली स्मृति होने के साथ-साथ भविष्य की संभावनाओं का भी मजबूत आधार प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ

1. आशर, सी. बी. (2015). *आर्किटेक्चर ऑफ मुगल इंडिया.* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. बीच, एम. सी. (1990). *द इम्पीरियल इमेज: पेंटिंग्स फॉर द मुगल कोर्ट.* फ्रीर गैलरी ऑफ आर्ट।
3. चंद्रा, स. (2007). *मेडीवल इंडिया: फ्रॉम सल्तनत टू द मुगल्स (1206–1526).* हर-आनंद पब्लिकेशन्स।
4. कनिंघम, ए. (1885). *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट्स: बुंदेलखंड टूर्स.* गवर्नमेंट प्रेस।
5. डेविस, पी. (1984). *स्प्लेंडर्स ऑफ द राज: ब्रिटिश आर्किटेक्चर इन इंडिया, 1660–1947.* जॉन मरे।
6. ईटन, आर. एम. (2000). *एसेज ऑन इस्लाम एंड इंडियन हिस्ट्री.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. हंटिंगटन, एस. एल. (1985). *द आर्ट ऑफ एंशियंट इंडिया.* वेदरहिल।
8. जैन, आर. के. (2002). *बिटवीन हिस्ट्री एंड लीजेंड: स्टेटस एंड पावर इन बुंदेलखंड.* ओरिएंट ब्लैकस्वान।
9. खान, एम. ए. (2011). *आर्टिस्टिक हेरिटेज ऑफ बुंदेलखंड.* अगम कला प्रकाशन।
10. मजुमदार, आर. सी. (सं.). (1951). *द स्ट्रगल फॉर एम्पायर.* भारतीय विद्या भवन।
11. मिशेल, जी. (1992). *द पेंगुइन गाइड टू द मॉन्यूमेंट्स ऑफ इंडिया: इस्लामिक, राजपूत, यूरोपियन.* पेंगुइन बुक्स।
12. राय, एच. सी. (1954). *हिस्ट्री ऑफ द चंदेल्स ऑफ जेजाकभुक्ति.* पुन्थी पुस्तक।
13. शर्मा, आर. (2020). *मार्वल्स ऑफ बुंदेला आर्किटेक्चर: टेम्पल्स, पैलेसेस एंड अदर स्ट्रक्चर्स.* आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।
14. वर्मा, ए., एवं देवी, ए. (2024). *हिस्टॉरिकल एंड कल्चरल हेरिटेज ऑफ बुंदेलखंड रीजन: कंजर्वेशन, विज़ुअलाइज़ेशन, यूज़िंग जीआईएस टेक्नोलॉजीज़. शोधकोष: जर्नल ऑफ विज़ुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5*(2), 501
15. सिंह, यू. (2008). *ए हिस्ट्री ऑफ एंशियंट एंड अर्ली मेडीवल इंडिया.* पियर्सन एजुकेशन।
16. थापर, र. (2002). *अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. 1300.* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
17. टिलटसन, जी. एच. आर. (1999). *द राजपूत पैलेसेस.* येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
18. यूनेस्को। (2019a). *द हिस्टॉरिक एनसेंबल ऑफ ओरछा.* यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर। https://whc.unesco.org/en/tentativelists/6404/
19. यूनेस्को। (2019b). *द पैलेस-फोर्टरिसेस ऑफ द बुंदेल्स.* यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर। https://whc.unesco.org/en/tentativelists/6806/

20. विलिस, एम. (1997). *टेम्पल्स ऑफ ग्वालियर एंड नियरबाय डिस्ट्रिक्ट्स.* भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।

21. यादव, बी. एन. एस. (1982). *सोसाइटी एंड कल्चर इन नॉर्दर्न इंडिया इन द ट्वेल्थ सेंचुरी.* जॉर्ज एलन एंड अनविन।